हाड़ौती चित्रशैली की चित्रण प्रविधि एवं तकनीक

हेमराज मालव

शोधार्थी, दृश्य कला–विभाग, विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

सार

हाड़ौती चित्रशैली (बूंदी एवं कोटा शैली) राजस्थानी चित्रकला की एक अत्यंत जीवंत और समृद्ध परंपरा है। इसकी चित्रण प्रविधि एवं तकनीक की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

माध्यम एवं धरातल (Medium and Surface)

• भित्ति चित्र (Mural/Fresco): हाड़ौती शैली मुख्य रूप से अपनी भित्ति–चित्रों (दीवारों पर बने चित्रों) के लिए प्रसिद्ध है। बूंदी के गढ़ पैलेस स्थित 'चित्रशाला' (उम्मेद महल) इसकी श्रेष्ठ मिसाल है, जहाँ दीवारों और छतों पर अद्भुत भित्ति चित्र बनाए गए हैं।

• लघुचित्र (Miniature Paintings): भित्ति चित्रों के अलावा कागज, कपड़े और हाथीदांत पर लघुचित्र भी बनाए गए। कागज पर काम करने के लिए भारतीय हस्तनिर्मित कागज का प्रयोग होता था।

परिचय

रंग एवं उनकी निर्माण तकनीक (Colours and Preparation)

• प्राकृतिक रंग: चित्र बनाने के लिए खनिज (Mineral), वनस्पति (Plants) और बहुमूल्य पत्थरों/धातुओं से प्राकृतिक रंग तैयार किए जाते थे।

• स्वर्ण एवं रजत का प्रयोग: चित्रों को शाही और आकर्षक रूप देने के लिए असली सोने और चांदी के वर्क तथा रंगों का महीन उपयोग किया जाता था।

• रंगों की विशिष्टता:[1,2,3]

  • बूंदी शैली: इसमें हरा, पीला और नीला रंग प्रमुखता से इस्तेमाल हुआ है।

• कोटा शैली: इसमें नीला, हरा, लाल और सुनहरा रंग ज्यादा दिखाई देता है।

रेखांकन एवं कूची (Brush and Line Work)

• सशक्त एवं प्रवाहमयी रेखाएं: हाड़ौती शैली की रेखाएं बेहद बारीक, स्पष्ट, और काव्यात्मक (Calligraphic) होती हैं।

• ब्रश (कूची): गिलहरी, बिल्ली या ऊंट के बालों से बने अत्यंत महीन ब्रश का उपयोग रेखाओं और चेहरों की बारीकियों को उकेरने के लिए किया जाता था।

आकृतियों एवं चेहरों की बनावट (Figure & Facial Features)

• मानव आकृतियां: पुरुषों और महिलाओं के चेहरे सुडौल, आंखें बड़ी, मछली के आकार जैसी या खंजन पक्षी के समान (मीन-आकृति), और नासिका तीखी बनाई जाती थीं।

• शारीरिक गठन: कोटा शैली में आकृतियां अपेक्षाकृत अधिक गठीली और बलवान दिखाई गई हैं, जबकि बूंदी शैली में कोमलता और भावुकता अधिक है।

पृष्ठभूमि एवं प्राकृतिक अंकन (Background and Nature)

• प्रकृति चित्रण: हाड़ौती चित्रों में सघन वन, कदंब के वृक्ष, खजूर के पेड़, केले के कुंज और बहते हुए सरोवर का सुंदर अंकन होता है।[2,3,4]

• पशु-पक्षी: बूंदी शैली में पशु-पक्षियों (विशेषकर मोर, सर्प, बंदर और बतख) का चित्रण बहुत प्रमुख है। कोटा शैली में शेर, चीता, हिरण और सुअर के शिकार के दृश्यों को बेहद जीवंत रूप में चित्रित किया गया है।

• आकाश: बादलों को सतरंगी, घुमावदार और मयूरगर्दन (नीले-हरे) शेड्स में दर्शाया जाता है।

विचार-विमर्श

भारतीय चित्रकला परंपरा में भित्ति–चित्रों का महत्त्व केवल उनके ऐतिहासिक प्राचीनत्व के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए भी है कि वे किसी समाज की जीवन–दृष्टि, धार्मिक आस्था, प्रति–बोध और सौंदर्य–चेतना को एक साथ अभिव्यक्त करते हैं। राजस्थान की भित्ति–चित्र परंपरा इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है। राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र हाड़ौती में विकसित चित्र परंपरा ने बूंदी और कोटा के माध्यम से एक विशिष्ट कलात्मक पहचान बनाई, जबकि झालावाड़ और बारां में भी इसके विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। बूंदी की चित्रशाला में इस विषय के साथ हाथी–युद्ध, घुड़सवार, राजकीय नृत्य आदि विषयों का अंकन मिलता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में हाड़ौती के भित्ति–चित्रों में आलेखन को केंद्रीय विषय बनाकर उसके कलात्मक, सांस्कतिक तथा सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष का अध्ययन किया गया है। यहां आलेखन से आशय केवल सजावटी बेल–बूटों अथवा हाशियों से नहीं, बल्कि रेखा, रूप, वनस्पति, पशु–पक्षी, प्राकतिक परिवेश, वास्तु–अलंकरण तथा प्रतीकात्मक रूपों की उस समग्र व्यवस्था से है जिसके द्वारा भित्ति–चित्र का स्वरूप निर्मित होता है। अध्ययन का आधार वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति है। बूंदी और कोटा की भित्ति–चित्र परंपरा को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए आलेखन में रेखा, लय, गति, संतुलन, अनुपात, अलंकरण और प्रतीकात्मकता का विवेचन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हाड़ौती में आलेखन केवल चित्र की शोभा बढ़ाने वाला तत्त्व नहीं है, बल्कि वह चित्र की संरचना और अर्थ विस्तार में सक्रिय भूमिका निभाता है। प्रकति के रूपांकन स्थानीय पर्यावरण से संबंध स्थापित करते हैं, जबकि धार्मिक एवं सांस्कतिक रूपांकन सामूहिक स्मृति और विश्वासों को अवश्यक रूप प्रदान करते हैं। अतः हाड़ौती के भित्ति–चित्रों में आलेखन को एक स्वतंत्र कलात्मक एवं सांस कतिक अध्ययन–विषय के रूप में देखना आवश्यक है। साथ ही, बदलते स्थापत्य परिवेश और संरक्षण संबंधी चुनौतियों को देखते हुए इन आलेखनों का व्यवस्थित दश्य एवं डिजिटल प्रलेखन भविष्य के अनुसंधान के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।[3,4,5]

भारतीय कला का विकास स्थापत्य और चित्रकला के परस्पर संबंध के साथ हुआ है। प्राचीन शैलाश्रयों से लेकर गुफाओं, मंदिरों, राजमहलों और हवेलियों तक दीवार चित्रांकन की एक दीर्घ परंपरा दिखाई देती है। भित्ति–चित्र की विशेषता यह है कि वह किसी स्वतंत्र चित्रपट्ट पर निर्मित न होकर वास्तु की सतह से जुड़ा रहता है। इसलिए उसका सौंदर्य केवल चित्रित आकृतियों में नहीं, बल्कि दीवार, छत, मेहराब, स्तंभ और अन्य स्थापत्य–तत्वों के साथ उसके संबंध में भी निहित रहता है।

राजस्थान की चित्रकला में क्षेत्रीय विविधता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हाड़ौती की चित्र परंपरा इसी विविधता का एक महत्त्वपूर्ण रूप है। बूंदी और कोटा इसके प्रमुख कलात्मक केंद्र रहे हैं। बूंदी की चित्रशाला तथा राजमहल परिसर में सुरक्षित भित्ति–चित्र इस परंपरा की महत्त्वपूर्ण धरोहर हैं। राजस्थान पर्यटन विभाग भी बूंदी के छत्रमहल और चित्रशाला की दीवारों एवं छतों पर बने चित्रों में कृष्ण–लीला, देवी–देवताओं, युद्ध, हाथियों तथा अन्य विषयों का उल्लेख करता है।

हाड़ौती की कला में प्रति, राजकीय जीवन, धार्मिक आख्यान और लोक–संवेदना के साथ रेखा तथा अलंकरण का विशेष महत्त्व है। यही कारण है कि यहां के भित्ति–चित्रों का अध्ययन केवल विषय–वस्तु के आधार पर करना पर्याप्त नहीं है। उनमें प्रयुक्त आलेखन का स्वतंत्र अध्ययन चित्रों की कलात्मक संरचना और सांस्कृतिक अर्थ को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करता है।

परिणाम

हाड़ौती की चित्रकला को उसके भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से अलग करके नहीं समझा जा सकता।

यहां की प्रति, स्थापत्य, राजकीय जीवन और धार्मिक परंपराओं ने चित्र विषयों को प्रभावित किया।

बूंदी की चित्रशाला इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। अभिलेखो के अनुसार चित्रशाला राजमहल परिसर में स्थित है और वहां के भित्ति–चित्रों में केंद्रीय विषय हैं । इसके साथ हाथी–युद्ध, घुड़सवारी, राजकीय जीवन और मनोरंजन के दृश्य भी अंकित हैं।[4,5,6]

राजस्थान पर्यटन विभाग के अनुसार बूंदी का छत्रमहल अपनी दीवारों और छतों पर बने चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। वहां कृष्ण–राधा, देवी–देवताओं, युद्ध और हाथियों आदि के दृश्य मिलते हैं।

इससे स्पष्ट है कि हाड़ौती के भित्ति–चित्रों में धार्मिक और राजकीय विषय एक साथ उपस्थित रहे। यही विषय–विविधता आलेखन को भी विविध रूप प्रदान करती है।

प्राकृतिक एवं वनस्पति आलेखन

हाड़ौती के भित्ति–चित्रों में प्रकति का अंकन केवल पृष्ठभूमि के रूप में नहीं हुआ है। वृक्ष, पत्तियां, पुष्प, बादल और जल दृश्य की भावभूमि और संरचना दोनों को प्रभावित करते हैं।

वृक्षों की शाखाओं और पत्तियों का फैलाव चित्र में स्थानिक विस्तार उत्पन्न करता है। किसी धार्मिक या प्रेम विषयक दृश्य में वृक्ष वातावरण का निर्माण करते हैं, जबकि राजकीय या आखेट दृश्य में वे प्राकृतिक परिवेश को स्पष्ट करते हैं।

पुष्प और लताओं का प्रयोग विशेषतः सजावटी क्षेत्रों और सीमांकन में दिखाई देता है। उनकी घुमावदार रेखाएं स्थिर दीवार पर गति का अनुभव कराती हैं। पुष्पों की पुनरावृत्ति और लताओं का क्रम चित्र में लय उत्पन्न करता है। बादल तथा जल तरंगों का रेखात्मक अंकन दृश्य में गति और वातावरण निर्मित करता है। वर्षा और मेघ भारतीय चित्रकला में भावात्मक अर्थ भी ग्रहण करते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक आलेखन दृश्य के वातावरण के साथ उसके भाव को भी प्रभावित करता है।

पशु–पक्षी आलेखन

पशु पक्षी हाड़ौती के भित्ति–चित्रों में महत्त्वपूर्ण दृश्य तत्व हैं। हाथी, घोड़े तथा अन्य पशु राजकीय जीवन और आखेट से जुड़े दृश्यों में दिखाई देते हैं।[5,6,7]

बूंदी चित्रशाला के आधिकारिक अभिलेख में हाथी युद्ध तथा घोड़े और हाथी पर सवार व्यक्तियों के दृश्यों का उल्लेख मिलता है। कोटा की चित्र परंपरा में आखेट और वन्यजीवन का विशेष महत्त्व रहा है। ऐसे दृश्यों में पशु की गति, संघर्ष और शक्ति को रेखाओं द्वारा व्यक्त किया गया। यहां रेखा केवल आकति की सीमा निर्धारित नहीं करती, बल्कि शरीर की गति को भी व्यक्त करती है।

मयूर और अन्य पक्षियों का अंकन दृश्य में लयात्मकता और सौंदर्य बढ़ाता है। पक्षियों के छोटे आकार और समूहात्मक विन्यास से बड़े भित्ति क्षेत्र में सूक्ष्म दृश्य लय निर्मित होती है।

वास्तु एवं ज्यामितीय आलेखन

हाड़ौती के भित्ति–चित्र स्थापत्य से गहरे रूप में जुड़े हैं। मेहराब, स्तंभ, झरोखे, छतरियां, कंगूरे और जालीनुमा संरचनाएं चित्र की पृष्ठभूमि ही नहीं, बल्कि उसके दृश्य संगठन का हिस्सा बनती हैं।

वास्तु–तत्वों का आलेखन चित्र में एक प्रकार का दृश्य–फ्रेम निर्मित करता है। इससे मुख्य कथा और उसके परिवेश के बीच संबंध स्थापित होता है। ज्यामितीय रूपों की पुनरावृत्ति क्रम, संतुलन और अनुशासन उत्पन्न करती है। इस प्रकार ज्यामितीय आलेखन प्राकृतिक और मानवीय रूपों के बीच दृश्य संतुलन स्थापित करने में सहायक होता है।

हाशिया और अलंकरण

हाशिया भित्ति–चित्र की सीमा निर्धारित करता है, किंतु उसकी भूमिका केवल सीमांकन तक सीमित नहीं है। पुष्प–पत्तियों, रेखाओं और ज्यामितीय रूपों की पुनरावृत्ति से हाशिया स्वयं एक स्वतंत्र अलंकरणात्मक रचना बन जाता है।[6,7]

मुख्य चित्र और हाशिये के बीच संबंध दर्शक की दृष्टि को व्यवस्थित करता है। इस दृष्टि से हाशिया चित्र के भीतर और वास्तु के बाहर के बीच एक संक्रमण क्षेत्र की भूमिका निभाता है।

आलेखन के अध्ययन में इसलिए हाशिये को स्वतंत्र दृश्य इकाई के रूप में देखना आवश्यक है।

रेखा और सौंदर्यशास्त्र

हाड़ौती के आलेखन का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार रेखा है। रेखा आकति को सीमा देती है, गति का संकेत करती है और विभिन्न रूपों के बीच संबंध स्थापित करती है।

रेखा की मोटाई, वक्रता, दिशा और पुनरावृत्ति से चित्र का भाव बदल सकता है। वृक्ष की शाखा में कोमल वक्रता, पशु की देह में तनाव और वास्तु में सीधी रेखा–इन सभी का अपना अलग दृश्य प्रभाव है। आलेखन में रेखा का प्रवाह चित्र को लय प्रदान करता है। जहां रेखाएं पुनरावृत्त होती हैं वहां दृश्य लय उत्पन्न होती है और जहां उनकी दिशा बदलती है वहां गति का अनुभव होता है।

बूंदी के भित्ति–चित्रों में आलेखन

बूंदी की भित्ति–चित्र परंपरा में प्रकति और कथा का संबंध विशेष रूप से दिखाई देता है। चित्रशाला के भित्ति–चित्रों में कष्ण–लीला के साथ राजकीय एवं मनोरंजन संबंधी दृश्य अंकित हैं।

बूंदी के चित्रों की संरचना में वृक्ष, वनस्पति, बादल तथा जल जैसे प्राकृतिक तत्व महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनका प्रयोग दृश्य को घेरने, विभाजित करने और वातावरण निर्मित करने के लिए किया जाता है।

राजस्थान पर्यटन विभाग के अनुसार चित्रशाला में कृष्ण–राधा से संबंधित दृश्यों के साथ युद्ध और पशु–चित्रण भी मिलता है। इसलिए बूंदी में आलेखन को केवल सजावटी प्रवृत्ति मानना उचित नहीं होगा। वह कथा, प्रकति और स्थापत्य को एक दृश्य इकाई में बांधने का कार्य करता है।

कोटा के भित्ति–चित्रों में आलेखन

कोटा की चित्र परंपरा में गतिशीलता और आखेट के दृश्यों को विशेष पहचान मिली। वन्य पशुओं की गति और संघर्ष को व्यक्त करने के लिए कलाकार को रेखा का अत्यंत प्रभावपूर्ण प्रयोग करना पड़ता था।

कोटा के आलेखन में वृक्ष, झाड़ियां, चट्टानें और पशुओं की गतिशील आकतियां मिलकर दृश्य में तनाव और गति उत्पन्न करती हैं। यहां प्राकृतिक पृष्ठभूमि स्वयं कथा का सक्रिय भाग बन जाती है।[5,6]

कोटा की भित्ति परंपरा को केवल आखेट तक सीमित करना भी उचित नहीं होगा। धार्मिक एवं राजकीय विषय भी इसके व्यापक चित्र विषय का हिस्सा रहे हैं। अतः कोटा में आलेखन विषय के अनुसार अपना स्वरूप बदलता दिखाई देता है।

झालावाड़ और बारां

हाड़ौती की व्यापक सांस्कृतिक परंपरा को समझने में झालावाड़ और बारां के भित्ति-चित्र भी उपयोगी हैं। इन क्षेत्रों में धार्मिक, लोक और स्थानीय सांस्कृतिक विषयों से संबंधित चित्रांकन के उदाहरण मिलते हैं।

यहां आलेखन अपेक्षाकत सरल रूप में दिखाई दे सकता है, किंतु उसकी सांस्कृतिक भूमिका कम नहीं होती। धार्मिक प्रतीकों, वास्तु-अलंकरण और स्थानीय रूपांकनों के माध्यम से कलाकार ने अपने सामाजिक परिवेश को दृश्य रूप प्रदान किया।

इन क्षेत्रों के भित्ति-चित्रों का व्यवस्थित क्षेत्रीय सर्वेक्षण भविष्य के शोध के लिए उपयोगी रहेगा।

आलेखन और सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता

भारतीय कला में अनेक रूपांकन अपने दृश्य अर्थ से आगे जाकर सांस्कृतिक अर्थ ग्रहण करते हैं। कमल, कलश, वृक्ष, पशु-पक्षी, सूर्य-चंद्र आदि रूप संदर्भ के अनुसार धार्मिक या सांस्कृतिक संकेत बन सकते हैं।

कृष्ण-लीला से संबंधित दृश्यों में प्राकृतिक तत्व कथा के धार्मिक वातावरण को निर्मित करते हैं। बूंदी चित्रशाला में कष्ण को केंद्रीय विषय के रूप में दर्ज किया जाना इस संबंध को स्पष्ट करता है।

इस प्रकार आलेखन दृश्य और सांस्कृतिक अर्थ के बीच सेतु का कार्य करता है। किसी वृक्ष या पुष्प का अंकन केवल प्रकति का अनुकरण नहीं, बल्कि विशिष्ट प्रसंग में धार्मिक, भावात्मक या सांस्कृतिक संकेत भी हो सकता है।

आलेखन और सांस्कृतिक स्मृति

भित्ति–चित्र किसी समाज की दृश्य स्मृति को सुरक्षित रखते हैं। उनमें अंकित वस्त्र, आभूषण, भवन, वाहन, पशु, उत्सव, धार्मिक प्रसंग और प्राकृतिक परिवेश उस समय के जीवन की जानकारी देते हैं।[6,7]

आलेखन इस स्मृति का सूक्ष्म स्तर है। किसी हाशिये का विन्यास, किसी पुष्प की आकृति अथवा किसी स्थापत्य का अलंकरण उस समय की रुचि और शिल्प–बोध की जानकारी दे सकता है।

इस अर्थ में हाड़ौती का आलेखन केवल कलात्मक रूप नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अभिलेख भी है।

रंग, रेखा और तकनीक

भित्ति–चित्र में रंग और रेखा एक–दूसरे के पूरक हैं। रेखा रूप को स्पष्ट करती है और रंग उसे दृश्य प्रभाव प्रदान करता है। रंगों की तीव्रता, रेखा की गहराई तथा पृष्ठभूमि के बीच संबंध से आलेखन उभरकर सामने आता है।

भित्ति–चित्रण में सतह की तैयारी, पलस्तर और रंग–प्रयोग तकनीकी रूप से महत्त्वपूर्ण रहे हैं। राजस्थान के भित्ति–चित्रों की सामग्री एवं तकनीक पर उपलब्ध अभिलेखीय अध्ययन भी इस तकनीकी पक्ष के महत्त्व को रेखांकित करते हैं। इसलिए हाड़ौती के आलेखन का अध्ययन केवल सौंदर्यशास्त्रीय नहीं, बल्कि तकनीकी दृष्टि से भी किया जाना चाहिए।

संरक्षण एवं प्रलेखन

हाड़ौती के भित्ति–चित्र ऐतिहासिक भवनों से जुड़े होने के कारण प्राकृतिक तथा मानवीय दोनों प्रकार के प्रभावों के प्रति संवेदनशील हैं। भवनों की उपेक्षा, नमी, सतह का क्षरण, अनुचित रंग–रोगन तथा स्थापत्य में परिवर्तन चित्रों के अस्तित्व को प्रभावित कर सकते हैं।

बूंदी की चित्रशाला के संबंध में राजस्थान पर्यटन विभाग उल्लेख करता है कि उसके अपेक्षाकत भीतरी स्थान के कारण वहां के चित्रों पर सूर्यप्रकाश और नमी का प्रभाव कम पड़ा और रंगों की चमक काफी हद तक बनी रही।

इससे यह स्पष्ट होता है कि भित्ति चित्र का संरक्षण केवल चित्र की सतह का संरक्षण नहीं है। भवन, वातावरण और चित्र तीनों को एक समग्र इकाई के रूप में देखना आवश्यक है।

निष्कर्ष

हाड़ौती के भित्ति–चित्र भारतीय चित्रकला की क्षेत्रीय परंपराओं में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनमें आलेखन की भूमिका अत्यंत व्यापक है। यह रेखा और रूप के माध्यम से चित्र को संगठित करता है, प्राकृतिक तत्वों के माध्यम से वातावरण बनाता है, पशु–पक्षियों के माध्यम से गति और जीवन का अनुभव कराता है तथा धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से सांस्कृतिक अर्थों को व्यक्त करता है।

बूंदी और कोटा की भित्ति चित्र परंपराएं इस बात का उदाहरण हैं कि एक ही सांस्कृतिक क्षेत्र में आलेखन विभिन्न विषयों और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग रूप ग्रहण कर सकता है। बूंदी में प्रति और कथा का लयात्मक संबंध अधिक स्पष्ट दिखाई देता है, जबकि कोटा की परंपरा में गतिशीलता और आखेट के दृश्य आलेखन को विशेष ऊर्जा प्रदान करते हैं।

इस अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन को केवल अलंकरण मानना उनके वास्तविक कलात्मक महत्त्व को सीमित करना होगा। आलेखन एक ऐसी दृश्य भाषा है जिसमें कला, संस्कति, प्रकति, धर्म और सामाजिक स्मृति एक दूसरे से जुड़ते हैं।[7]

आज इन भित्ति चित्रों के संरक्षण की आवश्यकता केवल इसलिए नहीं है कि वे पुराने चित्र हैं, बल्कि इसलिए भी है कि वे उस सांस्कृतिक संसार के दृश्य प्रमाण हैं जिसकी स्मृतियां धीरे–धीरे लुप्त हो रही हैं। अतः इनके संरक्षण के साथ–साथ सूक्ष्म आलेखनों का व्यवस्थित प्रलेखन भी आवश्यक है।

संदर्भ

1. realincredibleindia.com. "Art and craft in rajasthan". realincredibleindia.com. मूल से से 22 दिसंबर 2016 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः ०७ दिसम्बर २०१५.
2. ignca.nic.in. "sanjhi". ignca.nic.in. मूल से से 31 जनवरी 2017 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः ०७ दिसम्बर २०१५.
3. ब्रिटेनीक्का. "Mewar paintings". britannica. 11 फ़रवरी 2017 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथिः ०८ दिसम्बर २०१५.

4. कलचरोपीडिया. "Mewar Paintings of Rajasthan -". culturopedia. मूल से से 15 मार्च 2017 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथि: ०८ दिसम्बर २०१५.
5. "राजस्थान की चित्र शैलियां | Rajasthan ki chitrakala". topknowledge. मूल से से 1 नवंबर 2023 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथि: 2023-09-21.
6. द इंडियन एक्सप्रेस (२०१५). "The dream catcher". द इंडियन एक्सप्रेस. 22 मई 2017 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: ०७ दिसम्बर २०१५.
7. सक्सेना, हरमोहन (2014). राजस्थान अध्ययन. जयपुर: राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल जयपुर. p. 42.